**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 377-378**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

# मध्यकालीन साहित्यो ं का : एक अध्ययन

**डॉ0 मानस दुबे**

सहायक प्राध्यापक, एस.बी.टी.कॉलेज (अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय) बिलासपुर, (छत्तीसगढ) भारत

**Received- 13.10. 2021, Revised- 15.10. 2021, Accepted - 20.10.2021** **E-mail: drmanasdubey.bsp@gmail.com**

***सारांश: साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। किन्तु यर्थातवादी एवं व्यापक रूप से साहित्य का मूल्यांकन करे तो हमें अनुभव होगा कि ऊपर के कथन से साहित्य की बहुत सीमित भूमिका ही स्पष्ट होती हे। यर्थात के धरातल पर साहित्य की भूमिका इतिहास की ही भाँति व्यापक होती है। साहित्य समाज का दर्पण नहीं, वरन्! सम्पूर्ण इतिहास या युग–विशेष का पतिबिंब कहना अधिक उचित होगा। मध्यकालिन भारतीय इतिहास में बहुत–कुछ अंश साहित्य से ही ग्रहण किया।यों को विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित कर अखण्ड भारत में नाथपंथ के प्रभाव को फैलाया यह निर्विवाद सत्य है।***

**कुंजीभूत शब्द– साहित्य, समाज का दर्पण, यर्थाथवादी, व्यापक रूप, मूल्यांकन, भूमिका, धरातल, युग–विशेष।**

मध्यकालीन भारत के इतिहास में साहित्य विशेषतः हिन्दी साहित्य के योगदान का ही स्वरूप हे। उदाहरण स्वरूप सल्तनतकालीन कला विषयक अध्याय में चित्रकला के अध्ययन के लिए अनेक साहित्य ग्रंथों, जेसे चॉदायन, मृगावती आदि का उल्लेख किया गया हे। इसी तरह चाहमान वंशीय पृथ्वीराज चोहान तृतीय के इतिहास के संदर्भ में चंदरवरदाई के पृथ्वीराजरासो ओर अलाउद्दीन खिलजी राजपुताना अभियानों के संबंध में मलिकमुहम्मद जायसी पदमावत् का भी उल्लेख किया जा चुका हे। मध्यकाल में युग–परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य में उसके अनुरूप परिवर्तन हुए। मुसलमानों द्वारा सबसे अधिक साहित्यक ओर वैज्ञानिक ग्रंथ अरबी में रचे गये जो पैगम्बर की भाषा थी; जिसे स्पेन से लेकर बगदाद तक साहित्य ओर विज्ञान की भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता था लेकिन जो तुर्क भारत आए वे फारसी भाषा से बहुत ही अधिक प्रभावित थे। भारत में अरबी का प्रयोग अधिकतर इस्लामी विद्वानों ने प्रयोग किया। ग्याहरवीं शताब्दी मे ं पंजाब में तुर्की के आगमन के साथ देश में एक नई भाषा फारसी का प्रचलन हुआ। दसवीं सदी से ही ईरान ओर मध्य एशिया में फारसी भाषा का पुनरूत्थान हुआ ओर फारसी के कुछ महानतम कवि, जेसे फिरदोसी ओर सादी, दसवीं ओर चोदहवी सदी के बीच ही हुए। खुसरो वस्तुतः एक फारसी कवि था, किन्तु हिन्दी कविता से भी उसे बहुत ही लगाव था। अमीर खुसरो ने अपनी कविता 'अंशिका' में उसने हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला। अमीर खुसरो का विचार यह था कि हिन्दी भाषा फारसी भाषा के ही समान है। उसने अरबी के व्याकरण की तुलना हिन्दी व्याकरण से की हे। उसकी रचनाओं में हमे ं ऐसे शब्द मिलते हे जैसे प्रधान, सुन्दर, कामिनी इत्यादि। भक्ति आंदोलन के नेताओं ने भी साहित्य को प्रोत्साहित किया। नाम देव ने मराठी में लिखा लेकिन कुछ हिन्दी गीत ग्रंथ साहित्य में पाया जाता हे। रामानन्द ने भी कुछ भजन लिखे। साखी व रमेणी में कबीर के कुछ उपदेव मिलते है। हिन्दी साहित्य कबीर के प्रति काफी ऋणी है। गुरू नानक ने भी कुछ भजनों का रचना की हिन्दी ओर पंजाबी का मिश्रण मौजुद है। हिन्दी में मीराबाई का गीत बहुत मशहूर है।

नरसीमेहता गुजरात में एक प्रसिद्ध कवि हुआ ओर उसने रोचक भजनों की रचना की कृतिवास ने रामायण का संस्कृत से बंगला भाषा में अनुवाद किया। मुगलकालीन इतिहास जाननें के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत निम्नलिखित हैं– बाबरनामा – इसेतुजके – बाबरी या वाक्यातेबाबरी भी कहा जाता है। यह बाबर की आत्मकथा है, जिसे उसने तुर्की भाषा में लिखा था। बाद में इसका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ। सर्वप्रथम मूल तूर्की भाषा से अंग्रेजी अनुवाद मेडम बैवरीज द्वारा किया गया। अब्दुर्ररहीम खाना–खाना ने 1598–90 ई0 में इसका फारसी अनुवाद किया। इन संस्करणों का उर्दू अनुवाद मिजानासिरूदीन हैदर ने दिल्ली में 1924 में प्रकाशित किया। बाबर के विषय में जानने के लिए यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। तारीख–ए–रशीदी–इस ग्रन्थ की रचना मिर्जा मुहम्मद हैदर नेफारसी भाषा में किया है। इसमें उसने बाबर व हुमायूँ के समय की घटनाओं का वर्णन किया है। मिर्जा हैदर बाबर का सम्बन्धी था। छोटी आयु में ही उसकी सेवा में आ गया था। अपने इस ग्रन्थ में उसने तत्कालीन समय की घटनाओं को जो अपनी ऑखोंसे देखा वर्णन किया। उसने तारीख–ए–रशीदी को दो भागों में लिखा।

एक भाग में 1527–1533 ई0 तक के मध्य के समय की बाबर ओर हुमायूँ की घटनाओं का उल्लेख किया तथा दूसरे भाग में 1541 ई0 तक अपने जीवन की घटनाओं का वर्णन किया। हुमायूँनामाः–बादशाह अकबर के आग्रह पर बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम ने इसकी रचना की थी। इस ग्रन्थ के अधिकांश भाग में गुलबदन बेगम ने हूमायूँ के जीवन की सफलताओं, विजय, पराजय ओर कठिनाईयों का वर्णन किया है। उसने हुमायूँ ओर कामरान के मध्य युद्ध का वर्णन किया। तजकिरात–उल–वाकियात–इस ग्रन्थ की रचना जोहर आफताबची ने अकबर के आदेश परफारसी भाषा में की थी। जोहर आफताबची वर्षों तक हुमायूँ की सेवा में रहा। वह हुमायूँ के सैनिक अभियानों से लेकर दुर्दिन तक उसके साथ रहा। इसकारण हुमायूँ के विषय में जानने के लिए यह

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ग्रन्थ प्रमाणिक माना जाता है। तारीख–ए–दौलत–ए–शेरशाही–इसग्रन्थ की रचना हसन अली खाँ नेफारसी भाषा में लिखा था। इससे शेरशाह के व्यक्तित्व, जीवन ओर शासन के बारे में उपयोगी सामग्री प्राप्त होती है। तारीख–ए–शेरशाही–अब्बास खाँ सरवानी ने अकबर के आदेश पर इस ग्रन्थ को फारसी में लिखा था। इस ग्रन्थ से शेरशाह के जीवन चरित्र ओर शासन–प्रबंध पर प्रकाश पड़ता है। वाकियात–ए–मुश्ताकी–यह शेख रिजाकुल्ला मुश्ताकी द्वाराफारसी भाषा में लिखित लोदी ओर सूर काल पर प्रकाश डा लने वाली सबसे पहली पुस्तक है। इस ग्रन्थ में बहलोललोदी से लेकर अकबर के शासनकाल के मध्य भाग तक का वर्णन मिलता है। मुगलकालीन इतिहास साहित्य के स्त्रोत, तारीख–ए–दाउदी, अकबरनामा, तबाकात–ए–अकबरी, तारीख–ए–वदायेन, इकबालनामा, बादशाहनामा, तुगलक–ए–साहित्य, कानून–ए–हुमायूँ इत्यादिसाहित्य ग्रन्थहै। मुगल के शासन काल में एक समृद्ध साहित्य ग्रंथ का सृजन किया गया। इस काल की साहित्यीक और कलात्मक उपलब्धियों के कारण ही इसे सही रूप में द्वितीय शास्त्रीय था 'स्वर्ण युग' के रूप में उल्लेखित किया जाता है। कुछ मुगलसम्राट जेसे बाबर, हुमायँ, जहाँगीर स्वयं महान साहित्यकार थे। मुगलों के आगमन से ऐसा प्रतीत होता है कि संस्कृत के अध्ययन की सम्भावनाएँ बढ़ गई थी। अकबर संस्कृत को सरंक्षण प्रदान करने वाला प्रथम मुगल सर्माट था ओर साथ ही साथ संस्कृत के अनेक विद्वान ओर कवि उनकी दरबार की शोभा बढ़ाते थे। अकबर का शासनकाल हिन्दी काव्य का 'स्वर्ण युग' था। बहुत से श्रेष्ठ हिन्दी कवियों ने ऐसी कलात्मक कृतियों की गोरवग्रन्थ बन गये है। उर्दू साहित्य अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं को भी मुगलकाल में प्रोत्साहन मिला तथा अनेक उत्कृष्ठ कृतियों की रचना हुई। फारसी ओर हिन्दी के बाद इसकाल में बंगाली साहित्य ओर भाषा का भी अत्यधिक उन्नति हुई।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरिशचन्र्दवर्मा, मध्यकालीन भारत भाग–1, हिन्दी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
2. विद्याधर महाजन, मध्यकालीन भारत, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नईदिल्ली।
3. डॉ0 विपिन बिहारी सिन्हा, मध्य कालीन इस्लाम ज्ञानदा प्रकाशन, नईदिल्ली।
4. एस0 के0 पाण्डे, मध्यकालीन भारत, प्रयाग एकेडमी, इलाहाबाद।
5. मंजुमदार, राय चोधरी, पन्त, भारत का वृहत इतिहास–2, मेक मिलन इंडिया लिमिटेड, मुम्बई।
6. वी0 के0 अग्निहोत्री, भारतीय इतिहास, ऐंलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लि0 मुम्बई।
7. सतीशचन्द्र, मध्यकालीनभारत, औरियंट ब्लैक स्वॉन हैदराबाद।

*****